प्राक्कथन

'रामचरितमानस' के रचनाकार हिन्दी साहित्य जगत के चंद्रमा कहे जाने वाले प्रख्यात संत एवं महात्मा युगपुरुष तुलसीदास हैं । तुलसीदास न केवल काव्यद्रष्टा थे बल्कि त्रिकालदर्शी कवि की भांति ही युगद्रष्टा एवं समाज कल्याणकारक भी थे । इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज की बागडोर को थामकर भक्ति के रस में डुबोकर सही राह पर लाया था । 'रामचरितमानस' तुलसीदास की ही अमर कृति नहीं है, बल्कि यह विश्व साहित्य की एक अनुपम निधि है ।

जहाँ एक ओर 'रामचरितमानस' ने उत्तर भारत की जनता को भक्ति का सही मार्ग दिखलाकर उनका उद्धार किया वहीं दूसरी ओर भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में असमीया भाषा में रचित महानतम अमर कृति 'सप्तकाण्ड रामायण' भी साधारण जनता का पथ प्रदर्शन कर भक्ति भाव से उनका उद्धार करती रही है । 'सप्तकाण्ड रामायण' असमीया समाज और असमीया संस्कृति का अविभाज्य अंग बनकर रामकाव्य की अविरल कल्याणकारी भावधारा को प्रवाहित करती रही है । असमीया 'सप्तकाण्ड रामायण' मूलतः अप्रमादी कवि माधव कंदली द्वारा विरचित है जिसे माधव कंदली ने चौदहवीं शताब्दी में अपने आश्रयदाता वराह राजा महामाणिक्य के अनुरोध पर 'वाल्मीकि रामायण' के अनुवाद स्वरूप लिखा था । 'असमीया रामायण' में कवि ने वाल्मीकि रामायण की कथा योजना को ही बड़ी तन्मयता के साथ सुंदर ढंग से असमीया समाज और संस्कृति के अनुरूप बनाकर अनुपम सृजन किया है ।

मूलतः असमीया ‘सप्तकाण्ड रामायण’ माधव कंदली द्वारा सात कांडों में रचित हुआ था। परंतु कालक्रम के प्रभाव में इस मूल रामायण का आदि और उत्तर कांड काल कवलित हो गया। अतः अप्रमादी कवि की इस अनुपम कृति को अमर बनाए रखने के लिए परवर्ती काल में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने उत्तर कांड तथा माधव देव ने आदि कांड रचकर इसको पूर्ण रूप प्रदान किया। असमीया रामायण अब अप्रमादी कवि माधव कंदली की भक्ति भावना, महापुरुष शंकरदेव की युग कल्याणकारी भावमयी विचारधारा तथा परमपूज्य सेवा भाव में अग्रणी महापुरुष श्री श्री माधवदेव के काव्यशिल्प का एक सुंदर संगम है। यह अब इन तीनों महापुरुषों की भेंट बन समाज को भक्ति भाव में रमाकर उसका कल्याण करती है।

‘रामचरितमानस’ एवं ‘सप्तकाण्ड रामायण’ दोनों ही महाकाव्य केवल एक राम चरित काव्य ही नहीं है, बल्कि इसमें राम कथा के माध्यम से तत्कालीन समाज व्यवस्था एवं सामाजिक कल्याण की संभावनाओं और मानव सभ्यता के पूर्ण उत्कर्ष पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध-विषय “‘रामचरितमानस’ एवं ‘सप्तकाण्ड रामायण’ में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता” के अध्ययन का उद्देश्य कवि द्वय के काव्यों में निहित उन संवेदनाओं और मूल्यों को भी उजागर करना है जो युग के अनुरूप तथा आवश्यक हैं। इन काव्यों में निहित राम भक्ति की भावना समाज को जहाँ स्थिरता देती है, उसे एक संबल देती है कि जीवन का परम लक्ष्य एवं उद्देश्य रामभक्ति है तथा इन लक्ष्यों की प्राप्ति का मर्म भी बतलाती है।

इस अध्ययन का उद्देश्य केवल कवि की रामभक्ति का प्रकाश करने तक ही सीमित नहीं रहा है बल्कि यह रामभक्ति की प्रासंगिकता को भी उतना ही उजागर करती है। ‘रामचरितमानस’ एवं ‘सप्तकाण्ड रामायण’ में निहित व्यक्तित्व राम तथा इसके सभी प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व एवं विचारधारा को देखने एवं अध्ययन करने

से यह स्पष्ट पता चलता है कि इसमें निहित न्यायप्रियता, आदर्शवादी स्वभाव, मातृ तथा पितृ सेवा परायणता, पुत्र धर्म, पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति प्रेम, त्याग और समर्पण, भ्रातृ धर्म की पराकाष्ठा तथा समाज के नैतिक मूल्यों के प्रति जो आदर एवं इन महान गुणों को धारण कर समाज को सुंदर उदाहरण प्रदान करने का प्रयास अवश्य ही प्रासंगिक है । ये मूल्य परवर्ती युग ही नहीं बल्कि हर युग में सराहनीय तथा अनुकरणीय है । इन मूल्यों का अनुसरण यदि आज का समाज अपने प्रति करे तथा आने वाली पीढ़ी को इन नियमों एवं आदर्शों के प्रति संवेदनशील बनाए तो संसार का कल्याण संभव हो सकेगा । अतः शोध का उद्देश्य 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति की महानता का तथा इन काव्यों में निहित प्रासंगिक आदर्शवादी मूल्यों का अध्ययन कर समाज के सामने प्रस्तुत कर समाज को एक सुंदर जीवन शैली से परिचित कराने का एक विनम्र प्रयास है ।

'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में काव्यकारों ने अपनी भक्ति भावना को ही अभिव्यक्त नहीं किया है बल्कि भक्ति के उन मार्मिक प्रसंगों का भी सरलता से सृजन किया है जो भगवान और भक्त के मध्य एक सुंदर संबंध स्थापित करती हैं । इन भावनाओं को कवियों ने केवल भक्तिमय बनाकर ही प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि इन्होंने उन मूल्यों, सिद्धांतों तथा आदर्शों को भी प्रस्तुत किया है जो किसी भी सभ्य एवं सुशाषित समाज की नींव है । शोध का प्रधान उद्देश्य उन मूल्यों तथा आदर्शों का उद्घाटन कर उन्हें शोध के माध्यम से पाठक तथा समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना है । रामभक्ति तथा इनके मूल आदर्शों की आवश्यकता हर समाज का आवश्यक अंग है । ये आदर्श स्वभावतः ही प्रासंगिक हैं और इन प्रासंगिक बातों का अध्ययन कर इन्हें प्रस्तुत कर पाना ही मेरी सार्थकता होगी ।

असमीया और हिन्दी की वर्णाक्षरी तथा लेखन प्रारूप समान होने के कारण 'सप्तकाण्ड रामायण' तथा यहाँ प्रयुक्त अन्य असमीया पुस्तकों के संवादों का लिप्यंतरण करने में मुझे किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा । नागरी वर्णमाला से ही सम्पूर्ण लिप्यंतरण संभव हो गया । गौरतलब है कि इस शोध अध्ययन तथा इसके लेखन के समय मैंने यह देखा कि असमीया में 'य' तथा 'व' वर्ण को 'ज' और 'ब' उच्चारण करते हैं । इसके अतिरिक्त 'च', छ' को 'स' उच्चारण किया जाता है । 'श', 'ष', 'स' तथा 'ख' का उच्चारण 'ह' के रूप में किया जाता है । अतः यहाँ शोध पत्र लेखन में मैंने असमीया से हिन्दी में वर्णों का लिप्यंतरण करते हुए नागरी लिपि में ही वर्णों का यथारूप अनुवाद किया है । परंतु असमीया उच्चारण अनुरूप पढ़ते समय इसे उसी प्रकार से पढ़ा जा सकता है ।

अध्ययन की सुविधा हेतु शोध विषय **'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता** को मैंने उपसंहार लेकर कुल नौ अध्यायों में वैज्ञानिक रूप से विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय का विषय '**कवि व्यक्तित्व एवं कृतित्व'** है । इस अध्याय में मैंने क्रमानुसार तुलसीदास, माधव कंदली, शंकरदेव तथा मधावदेव के जीवन, व्यक्तित्व तथा रचनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । इसी अध्याय में मैंने कवियों द्वारा रचित बहुमूल्य रामकथा की सामाजिक उपयोगिता पर भी संक्षिप्त प्रकाश डाला है ।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक **'रामभक्ति काव्य परंपरा'** है । इस अध्याय में मैंने असमीया राम-काव्य परंपरा और हिन्दी राम-काव्य परंपरा पर प्रकाश डालते हुए राम-काव्य के उत्स वाल्मीकि रामायण से लेकर वर्तमान युग के राम-काव्यों पर भी संक्षिप्त प्रकाश डाला है । वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त महाभारत तथा पुराणों में भी राम-कथा का पूर्ण या आंशिक रूप जरूर विद्यमान है ।

तृतीय अध्याय को मैंने **''रामचरितमानस' में रामभक्ति का स्वरूप'** विषय देकर विस्तृत विवेचन किया है । इस अध्याय को वास्तव में मूल अध्याय की शुरुवात कहा जा सकता है । यहीं से रामभक्ति की विस्तृत व्याख्या का प्रारम्भ होता है । इस अध्याय में मैंने भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डाला है । भक्ति की अवधारणा तथा पौराणिक साहित्य में वर्णित भक्ति की जो विस्तृत विवेचना हुई है यहाँ उन सब का उल्लेख तथा रामभक्ति की विषद विवेचना यहाँ किया गया है । भक्ति के साधन या विधियों की यहाँ व्याख्या करते हुए नवधा भक्ति पर प्रकाश डाला गया है ।

चतुर्थ अध्याय **''सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति का स्वरूप'** है । यहाँ भी भक्ति की विवेचना के पश्चात भक्ति के नवों साधन के आधार पर राम-भक्ति की व्याख्या की गयी है । 'सप्तकाण्ड रामायण' के पात्रों के हृदय में व्याप्त श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वंदन, पाद-सेवन, अर्चन, सख्य, दास्य तथा आत्म-निवेदन भक्ति की विवेचना इस अध्याय का मूल विषय है ।

पंचम अध्याय का विषय **''रामचरितमानस' की प्रासंगिकता'** है । पंचम अध्याय के प्रथम में प्रासंगिकता विषय पर प्रकाश डाला गया है । तदुपरान्त रामभक्ति की प्रासंगिकता, रामभक्ति के आदर्श तथा राम के आदर्श व्यक्तित्व पर भी यहा विस्तार से विवेचन हुआ है । 'रामचरितमानस' में कुछ ऐसे नीति-नियम तथा सिद्धान्त आदि वर्णित हैं जो समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखकर लिखा गया है । ये नीति-नियम तथा सिद्धांत और इन पात्रों के व्यवहार या वाणी मे आए शिक्षाओं का आने वाले समाज में बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा । ये शिक्षाएँ एक सभ्य समाज की आवश्यकता ही हैं ।

षष्ठ अध्याय है **"सप्तकाण्ड रामायण' की प्रासंगिकता'** । इस अध्याय में भी भ्रातृ-धर्म, स्त्री-धर्म, पितृ धर्म, पुत्र का कर्तव्य, राजा का कर्तव्य, मात का धर्म, आतिथ्य धर्म, युद्ध, नीति, न्याय, परोपकार, साधू-संगति, गुरु की सेवा, प्रजा के प्रति दया, मित्र के प्रति कर्तव्य इत्यादि अनेकों उपविषयों पर विस्तार से उदाहरण संगत विचार किया गया है ।

सप्तम अध्याय **"रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति की तुलना'** है । यहाँ युग के दोनों ही महानतम महाकाव्य 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित राम-भक्ति की तुलना विषय पर विचार किया गया है । दोनों ही महाकाव्यों में निहित रामभक्ति की समानता और असमानता के ऊपर चर्चा यहाँ किया गया है ।

अष्टम अध्याय है **"रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों की प्रासंगिकता की तुलना'** । इस अध्याय में भी दोनों महाकाव्यों में निहित नीति-नियम, आदर्श, नैतिक सिद्धान्त, सत्य असत्य, न्याय-अन्याय, परोपोकर, धर्म आदि विषयों पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

नौवाँ अध्याय है **'उपसंहार'** । इस अध्याय के अंतर्गत सम्पूर्ण शोध-विषयों का निष्कर्ष है । प्रथम अध्याय से लेकर अंतिम अध्याय तक के शीर्षकों का संक्षिप्त विवरण यहाँ किया गया है ।

नवों अध्याय के विवरण के पश्चात अंत में मैंने ग्रंथ-सूची प्रस्तुत किया है । यहाँ शोध के लिए उपयुक्त ज्ञान राशि सँजोए अनेकों पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात उनका प्रकाशन विवरण प्रस्तुत है ।

मैंने अपना यह शोध कार्य अपने शोध निर्देशक डॉ. दिलीप कुमार मेधी, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम के निर्देशन में सम्पूर्ण किया है । निर्देशक महोदय ने अपनी अत्यधिक व्यस्तताओं के मध्य रहते हुए भी मेरे इस शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में मेरी बहुत प्रकार से सहायता की है तथा अपना उपयोगी सुझाव भी समय-समय पर देकर मेरा मार्गदर्शन किया है । उन्हीं के सहयोग एवं प्रोत्साहन के कारण आज मैं यह शोध कार्य सम्पूर्ण करने में सक्षम हो सका हूँ । निर्देशक महोदय के प्रति मेरे हृदय में कृतज्ञता सदैव बनी रहेगी ।

इसके साथ ही गौहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के समस्त गुरुजनों तथा सहयोगी कर्मचारियों के सहयोग एवं प्रेम के प्रति भी मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगा जिन्होंने मेरा सदैव मार्गदर्शन किया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में मैंने कई विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों आदि के पुस्तकालयों का भी सहारा लिया है । मैं इन सबों के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करता हूँ ।

मैं अपने गुरुजनों तथा इस्कॉन के उन सभी भक्तों का भी हृदय से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके संसर्ग तथा आशीर्वाद से मुझे इस शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में आत्मिक बल प्राप्त हुआ ।

दीपक कुमार गुप्ता

(दीपक कुमार गुप्ता)